DR. SHYAM BIHARI AGRAWAL

Dr. Shyam Bihari Agrawal is a distinguished artist, academician, and art historian whose contributions to Indian painting and visual arts span over six decades. He has played a pivotal role in preserving and extending the traditions of Indian painting, particularly in the styles of Basohli, Mewar, Kangra, and the Bengal School, while also infusing modern artistic sensibilities.

2. Born on 1st September, 1942, in Sirsa, Prayagraj, Dr. Agrawal pursued his formal training at Allahabad University's Department of Painting and later refined his skills at the Government College of Art and Craft, Kolkata. Under the mentorship of renowned artist Kshitindra Nath Majumdar, he honed his expertise in Fresco, Mural painting, and Indian miniature styles.

3. Dr. Agrawal has made significant contributions in various domains of art, including Fresco, Mural painting, photography, and sculpture. His painting 'Veni Gunthan' executed in the Mewar style, won the prestigious Indu Rakshita Award for the best Indian painting in 1965. Throughout his career, he has been an influential figure in academia, having served as a Lecturer and later as a Professor at Allahabad University's Department of Visual Arts. He has served as the Head of the Department of Painting at Allahabad University, Vice President and Secretary of the Allahabad University Teachers' Association, and a member of several boards and committees, including the Board of High School and Intermediate Education, Uttar Pradesh. He has also been an adviser for art curricula at various universities and a mentor to countless students and researchers. He has guided numerous doctoral students and contributed to the development of fine arts curricula at institutions such as Indira Kala Sangeet Vishwavidyalaya, Jharkhand, and Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramoday Vishwavidyalaya, Chitrakoot.

4. Beyond teaching, Dr. Agrawal has been a key figure in fostering artistic communities. He founded the 'Roop Shilp Lalit Kala Sansthan' in Prayagraj, an organization dedicated to promoting art and cultural discourse through exhibitions, workshops, and seminars. His influence extends to the editorial world, having served as the editor for esteemed art magazines like Kala Tramasik, Rooplekha, and Kala Darpan. His scholarly contributions include over 40 research papers, as well as numerous books on Indian painting and aesthetics, including 'Bhartiya Chitrakala aur Kavya,' 'History of Indian Painting' (Volumes I & II), and 'Figure Drawing and Composition'.

5. Dr. Agrawal's impact is evident in the widespread recognition of his work. He has been honoured by prestigious institutions, including the State Lalit Kala Akademi, Lucknow. His paintings are housed in notable collections such as the Allahabad Museum, Officers' Mess of the Kumaon Regiment, and in private collections of esteemed Indian and foreign art connoisseurs. His artistic excellence has been acknowledged with numerous accolades, including the 'National Humanity Award' for his contributions to art, education, and social service.

डॉ. श्यामबिहारी अग्रवाल

डॉ. श्यामबिहारी अग्रवाल एक प्रतिष्ठित कलाकार, शिक्षाविद और कला इतिहासकार हैं, जिन्होंने छह दशकों से अधिक समय तक भारतीय चित्रकला और दृश्य कला में योगदान किया है। उन्होंने भारतीय चित्रकला की परंपराओं, विशेष रूप से बसोहली, मेवाड़ , कांगड़ा और बंगाल स्कूल की शैलियों को संरक्षित करने और उसके विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, साथ ही उनमें आधुनिक कलात्मक संवेदनाओं का भी सम्मिश्रण किया है।

2. 1 सितम्बर 1942 को प्रयागराज के सिरसा में जन्मे, डॉ. अग्रवाल ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग से औपचारिक शिक्षा प्राप्त की और बाद में कोलकाता के राजकीय कला एवं शिल्प महाविद्यालय से अपने कौशल को निखारा। प्रसिद्ध कलाकार क्षितिन्द्र नाथ मजूमदार के मार्गदर्शन में उन्होंने फ्रेस्को, भित्ति चित्रकला और भारतीय लघु चित्रकला शैलियों में अपनी विशेषज्ञता को तराशा।

3. डॉ. अग्रवाल ने कला के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिसमें फ्रेस्को, भित्ति चित्र, फोटोग्राफी और मूर्तिकला शामिल हैं। मेवाड़ शैली में निर्मित उनकी पेंटिंग 'वेणी गुंठन' ने 1965 में सर्वश्रेष्ठ भारतीय चित्रकला के लिए प्रतिष्ठित इंदु रक्षिता पुरस्कार जीता। अपने पूरे करियर में, वह अकादमिक जगत में एक प्रभावशाली व्यक्ति रहे हैं, उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दृश्य कला विभाग में व्याख्याता और बाद में प्रोफेसर के रूप में कार्य किया है। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में चित्रकला विभाग के प्रमुख, इलाहाबाद विश्वविद्यालय शिक्षक संघ के उपाध्यक्ष और सचिव तथा उत्तर प्रदेश के हाई स्कूल और इंटरमीडिएट शिक्षा बोर्ड सहित कई बोर्डों और समितियों के सदस्य के रूप में कार्य किया है। वह विभिन्न विश्वविद्यालयों में कला पाठ्यक्रमों के सलाहकार और अनगिनत छात्रों तथा शोधकर्ताओं के मार्गदर्शक भी रहे हैं। उन्होंने डॉक्टरेट कर रहे कई छात्रों का मार्गदर्शन किया है और इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, झारखण्ड और महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्व विद्यालय, चित्रकूट जैसे संस्थानों में ललित कला पाठ्यक्रमों के विकास में योगदान दिया है।

4. शिक्षण के अलावा, डॉ. अग्रवाल ने कला समुदायों को बढ़ावा देने में प्रमुख योगदान दिया है। उन्होंने प्रयागराज में 'रूप शिल्प ललित कला संस्थान' की स्थापना की, जो प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं और संगोष्ठियों के माध्यम से कला तथा सांस्कृतिक विमर्श को बढ़ावा देने के लिए समर्पित संगठन है। उनका प्रभाव संपादकीय दुनिया तक फैला हुआ है। उन्होंने कला त्रैमासिक, रूपलेखा और कला दर्पण जैसी प्रतिष्ठित कला पत्रिकाओं के संपादक के रूप में काम किया है। उनके विद्वत्तापूर्ण योगदान में 40 से अधिक शोध पत्र, साथ ही भारतीय चित्रकला और सौंदर्यशास्त्र पर कई पुस्तकें जैसे 'भारतीय चित्रकला और काव्य', 'भारतीय चित्रकला का इतिहास' (खंड I और II), और 'आकृति चित्रण और रचना' शामिल हैं।

5. डॉ. अग्रवाल का प्रभाव उनके कार्य की व्यापक मान्यता से स्पष्ट होता है। लखनऊ स्थित राज्य ललित कला अकादमी सहित प्रतिष्ठित संस्थानों ने उन्हें सम्मानित किया है। उनकी पेंटिंग इलाहाबाद संग्रहालय, कुमाऊं रेजिमेंट के ऑफिसर्स मेस जैसे उल्लेखनीय संग्रहों में और प्रतिष्ठित भारतीय और विदेशी कला पारखियों के निजी संग्रह में मौजूद हैं। कला, शिक्षा और समाज सेवा में उनके योगदान के लिए 'राष्ट्रीय मानवता पुरस्कार' सहित कई पुरस्कारों से उनकी कलात्मक उत्कृष्टता को सम्मानित किया गया है।